"कैलाशनाथ मंदिर"

Mandip kumar chaurasiya

Assistant professor(Guest)

Dept. of A.I.H. & Archaeology

Patna university, patna-800005

B.A. – 2nd Year

Paper – III (Indian Art, Architecture and Archaeology)

महाराष्ट्र में औरंगाबाद के निकट एलोरा के गुफा-मंदिर हैं| यह पर्वतीय स्थान अत्यंत रमणीय है| एलोरा के गुफा मंदिर भारतीय कला की अनुपम देन है| एलोरा अपने अलौकिक मूर्तियों के लिए विश्व विख्यात् है| यहाँ लगभग डेढ़ किलोमीटर लम्बी पर्वतीय चट्टानों को उत्कीर्ण कर तीनो धार्मिक सम्प्रदायों से सम्बंधित मठों एवं मंदिरों का निर्माण किया गया| यहाँ हिन्दू गुहा वास्तु के अंतर्गत कुल सोलह भवनों का निर्माण हुवा, जिनमे कैलाश मंदिर की अभिकल्पना, रचना तकनीक, निर्माण शैली तथा संयोजन सभी दृष्टियों से भिन्न प्रकार का है तथा वास्तु के क्षेत्र में विश्व के प्रमुख आश्चर्यों में माना गया हैं|

राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम ने अपने राज्य के विस्तार के लिए अनेक विजय अभियान किए, जिससे उसे अपार धन-सम्पति प्राप्त हुई| अपनी विजयों की स्मृति को चिर-स्थाई बनाये रखने के लिए उसने अद्भुत और विशाल शिव मंदिर

का निर्माण करवाया| इसे एक विशाल पर्वत-खंड को काट कर तराश कर मंदिर जैसा आकार दिया गया है| यह मंदिर दक्षिण भारतीय 'पल्लव शैली' में निर्मित हैं तथा अपने पूर्वर्ती कांचीपुरम के कैलाश मंदिर तथा पद्दकल के विरूपाक्ष मंदिर से मिलता-जुलता हैं|

इस मंदिर के निर्माण में शैलकर्त वास्तु की दोनों विधियों का प्रयोग एक साथ हुवा हैं| एक भारी भरकम विशालकाय शिला को गढ़कर निर्मित मंदिर का आकार दिया गया, तदनुपरांत तीनों पार्श्वो में बची हुई खड़ी चट्टानों को छेदकर भीतर बहुमंजिले गुफा भवनों का निर्माण किया गया|

इस मंदिर के निर्माण के लिए पर्वत की चोटी के एक छोर को तीन बड़े-बड़े समकोण खतों में पहाड़ के निचे तक सीधी खड़ी गहराई में काटा गया हैं| यह 300 फुट लम्बा और 175 फुट चौड़ा आयताकार क्षेत्र बन गया हैं| इसमें आगन हैं और बीच में 200 फुट लम्बी, 100 फुट चौड़ी एवं 100 फुट ऊँची एक चट्टान सीधी खड़ी है| यह मंदिर दो मंजिलों में नियोजित है| पत्थर के चट्टानों को आवश्यकतानुसार तराश कर कई कक्ष बनाये गये और अनेक मूर्तियों से सुसज्जित किया गया|

कैलाशनाथ मंदिर में मंदिर का मुख्य भाग, प्रवेश द्वार, नंदी मंडप और आँगन चार प्रमुख अंगो की योजना है| यह मंदिर पश्चिम से पूर्व की ओर विस्तृत है| इसका मुख्य भाग सामानांतर चतुर्भुजाकार है, मुख्य मंदिर एक ऊँचे ठोस चबूतरें पर निर्मित हैं| इस चबूतरे की ऊँचाई 25 फुट है| चबूतरे की दिवार की सतह में हाथी तथा सिंह की मूर्तियाँ तक्षण की हुई है, जिससे इसकी सुन्दरता बढ़ गई है| मुख्य मंदिर के भीतर 72 फुट लम्बा और 62 फुट चौड़ा एक स्तम्भयुक्त कक्ष है| इस कक्ष के आगे अंतराल की योजना है, जो गर्भगृह की ओर जाता है|

स्तम्भयुक्त कक्ष के भीतर 16 वर्गाकार सहायक स्तंभों की व्यवस्था है| ये चार चार के समूह में प्रत्येक दिशा में निर्मित हैं|

Fig – 1 एलोरा का कैलाश मंदिर

मुख्य मंदिर के समक्ष नंदी मंडप निर्मित है| यह मंडप 22 फूट वर्गाकार है, जो 25 फुट ऊँचे चबूतरे पर बना है| इस मंडप के दोनों ओर ठोस ध्वजस्तम्भ है| प्रत्येक की ऊँचाई 51 फुट है| इनके ऊपर शिव के प्रतिक त्रिशूल बने है| इससे मंदिर की सुन्दरता और बढ़ गई है|

Fig – 2 कैलाश मंदिर

कैलाशनाथ मंदिर में एक प्रांगण की योजना है| इसके चतुर्दिक स्तंभों पर आश्रित बरामदा है, जो छत से ढका है और दोनों ओर से खुला है| इस प्रांगण में जगह-जगह परिशिष्ट कक्षों के प्रवेश द्वार है| मंदिर के पीछे का भाग भी एक सेतु द्वारा मुख्य प्रवेशद्वार से संलग्न है| कैलाशनाथ मंदिर के सामने एक दीप-स्तम्भ है| यह अपनी सुन्दरता के कारण दर्शनीय है| भारतीय गुफा स्थापत्य में कैलाश-मंदिर उत्कृष्ट एवं महान रचना है| इस मंदिर की योजना अति विशाल थी| यह मंदिर शिल्पियों की दक्षता का पूर्ण परिचय देता है| मंदिर के अंग-प्रत्यंग की बनावट अति सुन्दर है| इनकी भित्तियों पर उत्कीर्ण मूर्तियाँ अति सजीव है| जिसे देख मालूम होता है की इस मंदिर में मूर्तियों की प्रधानता है| इसके मोटे स्तम्भ विभिन्न देवी-देवताओ के मूर्तियों से सुसोभित है| जगह-जगह रामायण, महाभारत और पुराणों के अनेक दृश्य अंकित हैं| एक स्थान पर रावण को कैलाश पर्वत को उठाते हुवे दिखाया गया है|

कैलाश-मंदिर के स्तम्भ तथा अर्धस्तम्भ द्रविड़-शैली में निर्मित है| संभवतया, यह इसी शैली का अनुकरण हो| डा० भगवत शरण उपाध्याय की उक्ति है की यधपि यह मंदिर पल्लव शैली का ही विकसित रूप है| इसका अलंकरण तथा मूर्तियाँ दक्षिण के सारे मंदिरों की मूर्तियों से सुन्दर है| इनको देखकर आध्यात्मिक सुख का अनुभव प्राप्त होता है| शिल्पियों ने इस निर्जीव पत्थर में प्राण डालकर अपनी कलाकृति को अमर बना दिया है| संसार में एक ही चट्टान से बना इसके समक्ष दूसरा कोई भवन नहीं है| इस विशाल मंदिर में लगे श्रम, धन, समय को देखकर मनुष्य आश्चर्यचकित रह जाता है| यह गुफा मंदिरों में अद्वितीय एवं अनुपम है|